नौ सेना अकादमी, झिमाला के उद्घाटन अवसर पर माननीय प्रधानमंत्री का भाषण

8 जनवरी 2009

मुझे अरब सागर से ऊंचे इस शानदार कैम्पस में उपस्थित हो कर आज बेहद खुशी हो रही है । भारतीय नौ सेना अकादमी की स्थापना के लिए इससे (झिमाला) बेहतर स्थान कोई नहीं हो सकता था । इसके लिए मैं केरल सरकार का आभारी हूँ ।

आज हमारे स्वर्गीय प्रधानमंत्री श्री राजीव गांधी का स्वप्न साकार हुआ है। जिन्होंने इस अकादमी की आधारशिला रखी थी । विश्वस्तरीय नौ सेना अकादमी की स्थापना करने का निर्णय वास्तव में एक दूरदर्शी निर्णय था । जैसे ही मैं अपने सामने फैले हुए विशाल अरब सागर और हिंद महासागर से परे देखता हूँ तो यह बात आसानी से समझ सकता हूँ कि राष्ट्र के अत्यावश्यक सुरक्षा हितों की रक्षा करने में भारतीय नौ सेना की व्यापक भूमिका क्यों होनी चाहिए ।

मुम्बई आक्रमण ने समुद्र से होने वाले विषम खतरों का जवाब देने और अत्यधिक सतर्कता की आवश्यकता को उजागर कर दिया है । हमें न केवल अरब सागर बल्कि हिंद महासागर से भी ऐसे खतरों का सामना करना पड़ता है । विभिन्न आतंकवादी और अन्य गुट भारत के आपपास के समुद्रों का प्रयोग जघन्य कार्यों के लिए अधिकाधिक करने लगे हैं । यह एक चिन्ता का विषय है ।

समुद्री सुरक्षा संबंधी इस नए परिवेश में आपके उत्तरदायित्व और अधिक बढ़ जाते हैं । हमारी तटरेखा लगभग 7600 कि.मी. है तथा हिंद महासागर मे लगभग 1200 द्वीप प्रदेश हैं । हमारा व्यापक 'एक्सक्ल्यूसिव इॅकानॉमी जोन' है। हिंद महासागर से हमारा हित जुड़ा है और हिंद महासागर रिम के देशों विशेषकर खाड़ी क्षेत्र के देशों के साथ हमारा घनिष्ठ संबंध है ।

हमें यह भी मानना चाहिए कि हमारे हित और प्रभाव-क्षेत्र में से जुड़े प्रतिस्पर्धी हित भी हैं, जिनका ध्यानपूर्वक मॉनीटरन करना होगा ।

अतः हमारे सुरक्षा हितों की रक्षा करने में भारतीय नौ सेना का महत्व सर्वोपरि हो गया है । इसलिए भारतीय नौ सेना को इस क्षेत्र में निस्सन्देह ही अत्यधिक महत्वपूर्ण समुद्री शक्ति होना चाहिए ।

नौ सेना, तट रक्षक और आसूचना एजेंसियों के लिए अनिवार्य है कि वे अपने प्रयास-कार्यों को ध्यानपूर्वक समन्वित करें । हमें समुद्र से होने वाले खतरों का सामना करने के लिए विश्वसनीय कार्यनीति बनाने की आवश्यकता है । इस संबंध में सरकार यह सुनिश्चित करने के लिए सभी आवश्यक उपाय करेगी कि तट रक्षक और नौ सेना हमारे चारों ओर फैले समुद्र व महासागर की रक्षा करने के लिए पूर्णतः लैस हो।

खाड़ी क्षेत्र हमारा दूर का पड़ौसी क्षेत्र है जिसे अरब सागर अलग करता है और भारतीय नौ सेना उसका एक प्रहरी है । भारत और खाड़ी के देश इस क्षेत्र की शांति और समृद्धि के लिए समान विचार रखते हैं । खाड़ी के अनेक देश भारत को ऐसा मित्र और हितैषी पड़ौसी देश मानते हैं जिस पर वे मुसीबत व जरूरत के समय निर्भर रह सकते हैं । भारतीय मूल के लगभग पांच मिलियन लोग यहाँ रहते हैं । मैं गाज़ा में हुई घटना की कड़ी निन्दा करता हूँ और हजारों बेगुनाह नागरिकों की दुर्भाग्य पूर्ण हत्या पर निराशा व्यक्त करता हूँ । हम चाहते हैं कि युद्ध स्थिति तत्काल समाप्त की जाए ताकि बातचीत करके मामले को निपटाया जा सके । मैं फिलीस्तीनी मुद्दे पर अपने पूर्ण और दृढ़ समर्थन को दोहराता हूँ । भारत के लिए यह विशेष प्राथमिकता का क्षेत्र है और अगले दशक में इस पर और अधिक ध्यान दिया जाएगा ।

भारतीय नौ सेना संचार के समुद्री मार्ग की रक्षा करने की अन्य महत्वपूर्ण भूमिका भी अदा करेगी । संचार के समुद्री मार्ग के जरिए अधिकांश ऊर्जा की आपूर्ति की जाती है और हमारा समुद्री व्यापार होता है । चूंकि भारत के तेल और गैस का आयात बढ़ गया है अंतः नौ सेना से अपेक्षाएं और अधिक हो जाएंगी । हमारे आर्थिक पुनरूत्थान और हमारी समुद्री शक्ति के बीच एक घनिष्ठ संबंध है ।

चूंकि आर्थिक शक्ति एशिया में अन्तरित हो गई है, अतः हिंद महासागर क्षेत्र के जरिए होने वाले व्यापार की मात्रा और ऊर्जा की मांग भी तेजी से बढ़ेगी। इस अंतरण के साथ ही महासागर से होने वाले खतरों का आविर्भाव हो रहा है । ये खतरे हैं - महासागर के जरिए भीतरी प्रदेश में जनसमूह के विनाश के हथियार, छोटे अस्त्र-शस्त्र और अन्य आयुध सामग्री को लाना ले जाना, अन्तर्राष्ट्रीय जलमार्ग में समुद्री डकैती की आशंका, संगठित अपराध, औषध का अवैध व्यापार, पर्यावरणीय निम्नीकरण, समुद्री जल स्तर का बढ़ना, अवैध प्रवसन और मानव तस्करी ।

हाल ही में एडेन खाड़ी और सोमालिया के दूरवर्ती तट में समुद्री डकैतों का सामना करने के लिए नौ सेना ने यथोचित समय पर कार्रवाई की । मैं नौ सेना के कार्य की सराहना करना चाहूंगा, जिसे पूरे विश्व से व्यापक रूप से माना है ।

परम्परागत नौ-सेना शक्तियाँ अपनी समुद्री नियंत्रण क्षमता पर विश्वास करती रही हैं जबकि नई उभरती हुई शक्तियां समुद्री नियंत्रण क्षमताओं को नकार रही हैं । नौ सेना के आधुनिकी करण और अनुसंधान व विकास कार्यों पर अधिकाधिक संसाधन लगाए जा रहे हैं ताकि नए जहाज बनाए जा सकें और आसूचना नेटवर्किंग के जरिए अंतरिक्ष पर अधिपत्य के लिए संघर्ष किया जा सके । नौ सेना की क्षमता बढ़ाने के लिए अंतरिक्ष और आसूचना प्रौद्योगिकी को अधिकाधिक काम में लाया जा रहा है । सैन्य कार्यों और नेटवर्क-केंद्रित युद्ध में जारी क्रान्ति का नौ सेना पर भी प्रभाव पड़ा है और थल, वायु और नौ सेना बलों के संबंध में भी सुधार हुआ है ।

नए अंतर्राष्ट्रीय समुद्री कानून बनने से यह स्थिति सामने आई है । इससे संबंधित क्षेत्र में बाकी परिवर्तन आए हैं । भारत पर इसके प्रमुख प्रभाव पड़ेंगें । भारतीय नौ सेना के लिए यह जरूरी होगा कि वह सैन्य मिशन तथा कार्य नीति से शत्रु को रोकने से लेकर आपदाग्रस्त मनुष्यों की मदद करने तक के तमाम कार्यक्षेत्र में कार्यनिष्पादन के लिए सक्षम बने । प्रगति के पथ पर अग्रसर भारत को ऐसी नौ सेना क्षमताओं की आवश्यकता होगी जो व्यापक राष्ट्रीय हितों के अनुरूप हो ।

आज नौसेना शक्ति केवल युद्ध लड़ने के लिए नहीं हैं । अन्तर्राष्ट्रीय कूटनीति, वाणिज्य, ऊर्जा आपूर्ति, समुद्री संसाधनों के दोहन और समुद्री व्यवस्था सुनिश्चित करने में इसकी अभिन्न भूमिका है । इस परिप्रेक्ष्य में नौ सेना के पारस्परिक कार्य महत्वपूर्ण भूमिका अदा करते हैं । हाल ही के वर्षों में भारत ने विभिन्न देशों के साथ अनेक अभ्यास किए, जिसके परिणामस्वरूप भारतीय नौ सेना के लिए व्यापक रास्ते खुल गए । उनसे सामान्य सुरक्षा खतरों के प्रति प्रतिक्रिया व्यक्त करने के लिए अन्य नौ सेनाओं के साथ कार्य करने की भारतीय नौ सेना की क्षमता बढ़ गई है ।

व्यापार का समुद्री मार्ग खुला रखने, प्रक्षेपण शक्ति और कार्य की स्थिरता कायम रखने से पता चलता है कि भारत के पास शक्तिशाली समुद्री जलसेना है। भारत के सुरक्षा हितों के संदर्भ में समुद्र की प्रासंगिकता बढ़ती जा रही है और इस बदलते परिवेश में हमें अपनी सैन्य तैयारी फिर से करनी चाहिए । नौ सेना के आधुनिकीकरण के लिए हमारे पास उपयुक्त महत्वाकांक्षी योजना है जो नौसेना के त्रि-आयामी बल के रूप में आविर्भाव में सहायक होगीं ।

इन चुनौतियों का सामना करने के लिए नौसेना को सुप्रशिक्षित जनशक्ति की आवश्यकता है । मुझे विश्वास है कि नौ सेना अकादमी ऐसे सर्वगुण संपन्न स्नातक तैयार करेगी जिनके पास नवीनतम वैज्ञानिक और तकनीकी कौशल हो और जो हमारे राष्ट्रीय हितों की व्यापक जानकारी रखते हैं ।

मैं उन सभी व्यक्तियों को बधाई देता हूँ जिन्होंने इस संस्थान को बनाने में योगदान दिया । ऐसे संस्थानों को उनकी इभारतों की बनावट की बजाय उनके छात्रों के गुणों से अच्छी तरह जाना जाता है और मुझे कोई संदेह नहीं है कि भारतीय नौ सेना (आई एन एस) सेवा झिमाला प्रतिवर्ष नौसेना अधिकारियों की ऐसी भावी पीढ़ी तैयार करेगी, जिस पर देश को गर्व होगा ।

मुझे नौसेना अकादमी राष्ट्र को समर्पित करते हुए बेहद खुशी हो रही है ।

जयहिन्द।

****